Fortis Hospital, Noida :

Hindustan, April 02, 2014, Edition : Noida, Page No. 19 :

आटिज्म से पीड़ित बच्चों की बौद्धिक क्षमता का नहीं हो पाता है विकास

चार माह से ही बच्चों के हाव-भाव पर रखें ध्यान

वर्ल्ड ऑटिज्म डे

नोएडा | वरिष्ठ संवाददाता

तीन महीने की उम्र के बाद से अगर बच्चा आवाज व रोशनी देखने पर हरकत नहीं कर रहा है तो इसे अनदेखा न करें। विशेषज्ञ डॉक्टर के पास जाकर इसकी जांच जरूर कराएं। यह आटिज्म हो सकता है। इस बीमारी में बच्चों को मस्तिष्क का विकास पूरी तरह नहीं हो पाता या फिर प्रभावित रहता है।

फोर्टिस अस्पताल के न्यूरोलॉजी विभाग के डॉक्टर आतमप्रीत बताते हैं कि ऑटिज्म के दो तीन मरीज प्रति महीने अस्पताल में इलाज के लिए आ रहे हैं। इस बीमारी में बच्चों को व्यावहारिक, बोलचाल व सामाजिक परेशानी आती है। बच्चे अपने धुन में ही रहते हैं। ऑटिज्म के शिकार 50 प्रतिशत बच्चों का ज्ञान औसत से भी कम होता है, जबकि 10-12 प्रतिशत बच्चे ही पढ़ाई व अन्य कार्यों में औसत होते हैं। इस बीमारी को ठीक करने के लिए दवाएं असरकारक नहीं है। ऐसे में इन्हें अलग अलग डॉक्टर से परामर्श के आधार पर इलाज किया जाता है।

शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. एसपी शर्मा ने बताया कि ऐसे बच्चों के इलाज के लिए ऑक्यूपेशनल थेरेपी व पिडियाट्रिक साइकोलॉजिस्ट की मदद लेनी पड़ती है। सामान्य बच्चों के मुकाबले ऐसे बच्चों में बौद्धिक क्षमता कम होती है। ऐसे बच्चों के इलाज के लिए व्यवहार, बोलने की क्षमता आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

ये हो सकते हैं बीमारी के कारण

- आनुवांशिक
- जन्म के दौरान सिर में चोट
- क्रोमाजोम संबंधी दिक्कतें

इन बातों का रखें ध्यान

- चार माह की उम्र तक अगर बच्चा आवाज व रोशनी पर हरकत न करे
- एक साल तक भी बच्चा नहीं बोल रहा है तो आटिज्म के लक्षण हो सकते हैं
- छह से सात महीने की उम्र में बच्चे में पहचानने की क्षमता विकसित हो जाती है
- लिहाजा बच्चा जिसे पहचानता है उसकी ओर इशारा करने लगता है